6

दुखी दास

(यशायाह 53)

प्रेरितों 8 में फिलिपुस नामक एक मसीही सुसमाचार प्रचारक और कूश देश के मन्त्री के बीच मुलाकात का विवरण है जो यरूशलेम से जहां वह परमेश्वर की आराधना करने गया था, अपने रथ पर घर को जा रहा था। वह यरूशलेम में आराधना के लिए आया था जिस का अर्थ यह है कि वह यहूदी मत में परिवर्तित हुआ हो सकता है। एक और सम्भावना है कि वह उन लोगों में हो जिन्हें ''परमेश्वर का भय मानने वाले'' कहा गया है, यानी वे अन्यजाति जो इस्राएल के परमेश्वर की आराधना करते थे और आराधनालय के जीवन में भाग तो लेते थे पर खतना न करवाने के कारण पूर्ण रूप में परिवर्तित नहीं होते थे (देखें प्रेरितों 10:1, 2; 13:26)। तो फिर इस अन्यजाति के इब्रानी नबियों में से एक यशायाह की पुस्तक में से पढ़ने की बात आश्चर्यजनक नहीं है। हमें तो यह भी बताया गया है कि वह यशायाह 53:7, 8 में से पढ़ रहा था:

वह सताया गया, तौभी वह सहता रहा
और अपना मुंह न खोला;
जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय
वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है,
वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला।
अत्याचार करके और दोष लगाकर वे उसे ले गए;
उस समय के लोगों में से किस ने इस पर ध्यान दिया
कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया
मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी?

कूश देश के मन्त्री के पास उसके रथ में पहुंचने पर जब फिलिप्पुस ने उसे जो वह पढ़ रहा था उसे समझने में सहायता की पेशकश की, तो उसने पहले तो पूछा, ''मैं तुझ से बिनती करता हूं, यह बता कि भविष्यवक्ता यह किस के विषय में कहता है? अपने या किसी दूसरे के विषय में'' (प्रेरितों 8:34)। तब, बाइबल बताती है कि फिलिप्पुस ने इसी वचन से आरम्भ करके ''उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया'' (प्रेरितों 8:35)।

यह कैसे हो सकता है कि पुराने नियम का यह नबी, जो यीशु के जन्म से भी आठ सौ साल पहले लिख रहा था, यीशु और उसकी मृत्यु के विषय में लिख सकता हो? यशायाह 53 को और ध्यान से देखने पर हमें पता चलता है।

भविष्यवाणी की पृष्ठभूमि

दाऊद की मृत्यु के पश्चात, इस्राएल का सिंहासन उसके पुत्र सुलैमान के हाथों में चला गया (1 राजाओं 1; 2)। इस काल के दौरान इस्राएल और भी समृद्ध और शक्तिशाली बन गए, चाहे सुलैमान के शासन के अन्त के पास परमेश्वर ने सुलैमान के मूर्तिपूजा को सहन करने (और प्रोत्साहित करने) के कारण इस्राएल के विरुद्ध शत्रुओं को उठने दिया (1 राजाओं 11)। सलैमान के पुत्र राहोबाम ने उसकी मृत्यु के पश्चात राजभाग सम्भाला पर उसने मूर्खता से राज्य के बीच अनबन पैदा कर दी। इससे देश उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य में बंट गया, जिनमें प्रत्येक के ऊपर राजाओं की अपनी कतार थी। (केवल दक्षिणी राजाओं में दाऊद की सन्तान राज करती रही।) उत्तरी राज्य को ''इस्राएल'' और दक्षिणी राज्य को ''यहूदा'' कहा जाने लगा क्योंकि इसमें मुख्यतया यहूदा का गोत्र और बिनियामीन का छोटा सा गोत्र थे। दोनों राज्य परमेश्वर की व्यवस्था को त्यागने और बाहरी देवताओं की ओर मुड़ने के दोषी थे और बार-बार परमेश्वर उन्हें उस विनाश से चेतावनी देने के लिए जो उनके अपने मार्ग न बदलने पर उन पर आनी थी, नबियों को भेजता रहा।

यशायाह भी एक नबी था जिसका दाऊद के शासन के लगभग दो सदियों बाद आठवीं शताब्दी ई.पू. के दूसरे भाग में यहूदा और यरूशलेम के लोगों के लिए संदेश था (यशायाह 1:1), अश्शूर ने 722/721 ई.पू. में उत्तरी राज्य (इस्राएल) पर कब्जा कर लिया था। अब दक्षिणी राज्य (यहूदा) का भविष्य अनिश्चित था।

यशायाह की पुस्तक के पहले उन्नतालीस अध्याय मुख्यतया परमेश्वर की व्यवस्था को ठुकराने के कारण यहूदा देश पर आने वाली उसके न्याय की योजना के विषय में हैं। उस विनाश का पूरा होना 586 ई.पू. में हुआ, जब बाबुल के लोगों ने यरूशलेम को लताड़ते हुए, सुलैमान द्वारा बनाए गए मन्दिर को नष्ट कर दिया और बहुत से प्रमुख इस्राएलियों को उनके देश में से बाबुल और अन्य स्थानों पर भेज दिया।

परन्तु यशायाह 40 के आरम्भ में आरम्भिक अध्यायों से सुर और विषयवस्तु काफ़ी बदल जाते हैं। यशायाह 40:1 में मिलता है, ''तुम्हारा परमेश्वर यह कहता है, मेरी प्रजा को शान्ति दो, शान्ति!'' यशायाह की शेष पुस्तक अपने चुने हुए लोगों के लिए अन्त में परमेश्वर की बहाली के विषय को समर्पित है।

भविष्यवाणी का विषयः दुखी दास

शान्ति की इस प्रतिज्ञा का अधिकतर भाग, यशायाह ने बताया कि यहोवा के एक ''आदर्श दास'' की सेवकाई से मिलेगा जो वह सब करेगा जो करने में इस्राएली नाकाम हुए थे और जो उसकी बहाली का माध्यम बनेगा। यह दास कम से कम चार वचनों में प्रमुख व्यक्ति है, जिन्हें आम तौर पर ''दास के गीत'' का नाम दिया जाता है। ये वचन हैं यशायाह 42:1-4; 49:1-13; 50:4-11; और 52:13-53:12 जिनमें से अन्तिम वचन में वे आयतें हैं जिन्हें प्रेरितों 8 अध्याय में कूश देश का वह मन्त्री पढ़ रहा था।

यशायाह 53 विशेष रूप में उस दास की त्रासदी को दिखाता है कि चाहे उसे परमेश्वर द्वारा भेजा गया पर उसे अपने ही लोगों द्वारा ठुकराया गया। उसे बहुत ही तुच्छ जाने गए व्यक्ति के

रूप में वर्णित किया गया है, जिसकी लोगों ने कोई कदर नहीं की-तोभी, उसके उन सभी दुखों के द्वारा कुछ अनोखी बात हो रही है। वह दूसरों की गलतियों के लिए दुख उठा रहा था। नबी के अनुसार यह सब एक प्रकार से परमेश्वर की पूर्ण योजना से जिसमें वह दूसरों के उद्धार के लिए काम कर रहा था, मेल खाता था। उसके वफ़ादारी से, आज्ञा मानने के कारण, उस दास को समय पर ऊंचा किया जाना था।

नये नियम के लेखक एक मत से यशायाह 53 को उसके और उसके दुखों के लिए समझते थे, चाहे यह बहुत पहले लिखा गया था। नये नियम के दृष्टिकोण से इस्राएल के भाग्य अन्त में बहाल होना, सैनिक शक्ति या राजनैतिक सत्ता से नहीं बल्कि दास यानी परमेश्वर के अपने पुत्र के दुखों से होना था। इसके अलावा वह दास न केवल इस्राएल का बल्कि सब जातियों का भी छुड़ाने वाला बन गया-और उसके द्वारा दिलाया गया ''छुटकारा'' शारीरिक चंगाई से लेकर आत्मिक उद्धार तक था। इस्राएल के लोग उस दास की पहचान के लिए संकित हो सकते हैं, पर नये नियम के लेखक इस बात को पक्का मानते थे कि यह दास यीशु ही है।

उदाहरण के लिए मत्ती 8:14-17 में पतरस की सास को यीशु द्वारा चंगा करने के विवरण के अन्त में, हम पढ़ते हैं, ''जो वचन यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, 'उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया,' '' जो यशायाह 53:4 से लिया गया हवाला है। इसी प्रकार यीशु द्वारा दिखाए गए चिह्नों के लिए यहूदियों के अविश्वास की बात करते हुए यूहन्ना ने यशायाह 53:1 से उद्धृत किया: ''हे प्रभु, हमारे समाचार का किसने विश्वास किया है? ...'' (यूहन्ना 12:36ख-41)। मसीही लोगों से अपने विश्वास के लिए दुख उठाने को तैयार रहने की बात कहते हुए पतरस ने यशायाह 53 की एक आयत से लेते हुए उसे इन शब्दों के साथ अपनी टिप्पणी जोड़ी: ''और तुम इसी के लिए बुलाए भी गए हो क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो'' (1 पतरस 2:21)। इसका अर्थ यह हुआ कि यशायाह 53 एक मुख्य वचन है क्योंकि यह दिखाता है कि पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने यीशु और उसके आने की बात कितनी स्पष्ट लिखी है।

उसका ठुकराया जाना (यशायाह 53:1-3)

यशायाह ने पहले भविष्यवाणी की थी कि यीशु ठुकराए जाने का दुख उठाएगा। इस वचन की पहली तीन आयतों उसी दास के ठुकराए जाने के बारे में हैं। आयत 1 पूछती है, ''जो समाचार हमें दिया गया, उस पर किसने विश्वास किया?'' यह इस स्पष्ट उत्तर के साथ कि ''किसी ने नहीं'' अपना बनाया प्रश्न है। पौलुस ने यह ध्यान दिलाते हुए कि उसके यहूदी सुनने वालों में से कुछ लोग ही सुनाए गए संदेश को मानने को तैयार थे, रोमियों 10:16 में इसी आयत को दोहराया। यशायाह 53:2 कहता है, कि उस दास में ''न तो कुछ सुन्दरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते।'' आयत 2 की व्याख्या चाहे हर बार इस अर्थ में की जाती है कि यीशु का डील-डौल आकर्षक नहीं था, यह सम्भावना अधिक लगती है कि उसके समकालीनों को उसमें कुछ ''विशेष'' न दिखा और उन्होंने ऊपर से ही देखकर निर्णय कर लिया। जिस कारण वे उसे जो वह नहीं देख पाए जो वह

वास्तव में था। फिर आयत 3 कहती है, ''वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्यागा हुआ था; वह दुःखी पुरुष था, वह तुच्छ जाना गया, और, हम ने उसका मूल्य न जाना।''

नया नियम यीशु के बारे में इसी बात को कहता है कि यहूदी लोगों की व्यवस्था द्वारा उसे ठुकरा दिया गया जिसके पास वह मसीहा बनकर आया था। वास्तव में ''ठुकराया जाना'' यूहन्ना रचित सुसमाचार में मुख्य विषयों में से एक है जैसा कि उसके पहले अध्याय की इन आयतों से संकेत मिलता है:

> सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है, जगत में आनेवाली थी। वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना। वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया (यूहन्ना 1:9-11)।

यह ठुकराया जाना आज भी हो रहा है! उसके अपने ही समय की तरह ही दुखी दास अर्थात यीशु स्वार्थता अपने आपको बढ़ावा देने वाली मानसिकता के लिए आज हमारे संसार में पाई जाती है विशेष आकर्षण नहीं रहता। उसे लोगों की बड़ी संख्या द्वारा ठुकरा दिया जाता है। यदि वह सामर्थी हाकिम, धनवान कारोबारी अगुवे, कुशल धावक या किसी फिल्मी हीरो की तरह पृथ्वी पर आता तो उसके पीछे बहुत लोग हो लेते। आज भी यशायाह 53 वाला दुखी दास दो हज़ार वर्ष पहले की तरह ही आज भी उतना ''प्रसिद्ध'' नहीं हुआ।

उसका प्रतिनिधिक दुःख उठाना (53:4-6)

यशायाह 53 ने यह भी भविष्यवाणी की कि यीशु दूसरों के लिए दुख उठाएगा। 4 से 6 आयतें ज़ोर देती हैं कि उस दास के दुख इस भविष्यवक्ता सहित दूसरों की ओर से थे। एक चौकस पाठक इन आयतों में ''हम'' ''हमारा/हमारे/हमारी और अपना-अपना'' शब्दों को दस बार आते देखेंगे। ''निश्चय ... परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल हुआ; वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; ... और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए ...'' (ESV)। थियोलॉजियन यीशु के दुखों के इस पहलू को ''प्रतिनिधिक'' या ''वैकल्पिक प्रायश्चित,'' कहते हैं, जो ऐसी अभिव्यक्तियां हैं कि उनका अर्थ केवल यही है कि यीशु ने हमारे लिए हमारा दण्ड सहा। क्रूस पर अपने दुख और मृत्यु में वह हमारी ओर से वह सह रहा था जिसके हम हकदार हैं।

यीशु के क्रूस, संसार के पापों की ओर उसकी मृत्यु के बारे में नया नियम इतना ही कहता है:

> वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिए मर कर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए (1 पतरस 2:24)।

> हे मेरे बालको, मैं ये बातें तुम्हें इसलिए लिखता हूं, कि तुम पाप न करो; और यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह। और वही हमारे पापों का प्राश्यचित्त है: और केवल हमारे ही नहीं, बार सारे जगत के पापों का भी (1 यूहन्ना 2:1, 2)।

जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इससे प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएं। प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया; पर इसमें है, कि उसने हमसे प्रेम किया; और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पुत्र को भेजा। हे प्रियो, जब परमेश्वर ने हमसे ऐसा प्रेम किया, तो हम को भी आपस में प्रेम रखना चाहिए (1 यूहन्ना 4:9-11)।

क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिए मरा। किसी धर्मी जन के लिए कोई मरे, यह तो दुर्लभ है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिए कोई मरने का भी हियाव करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा। सो जब कि हम, अब उसके लोहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा क्रोध से क्यों न बचेंगे (रोमियों 5:6-9)।

यह सुसमाचार के संदेश का भाग है, जो हमारे दिलों के लिए आकर्षण होना चाहिए। यानी यह सच्चाई कि मसीह ने हमारे लिए दुख सहा और हमारे लिए मर गया। इस बात को और भी स्पष्ट देखना यशायाह 53 को प्रथम पुरुष एक वचन में बदलकर यशायाह 53 को ''व्यक्तिगत'' बनाना सहायक है। ''निश्चय उस ने *मेरे* रोगों को सह लिया और *मेरे* ही दुःखों को उठा लिया। ... परन्तु वह *मेरे* ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह *मेरे* अधर्म के कामों के लिए कुचला गया; *मेरी* ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से मैं चंगा हो जाएं।''

उससे दुर्व्यवहार (53:7-9)

इसके अलावा यशायाह ने बताया कि यीशु अन्याय को सहेगा। 7 से 9 आयतें दूसरों की ओर से उस दास द्वारा सहे जाने वाले पूरे अन्याय की बात बताती हैं। यशायाह ने कहा कि उस पर अत्याचार हुआ और वह सताया गया था, पर अपनी किसी गलती के कारण नहीं। आयत 7 उसके बलिदान के स्वैच्छिक होने पर ज़ोर देती है। दुख सहते हुए विरोध में या बदला लेने के लिए, ''उसने अपना मुंह न खोला।'' उसका प्राण ले लिया बल्कि उसका दफ़नाया जाना अपमान का एक कार्य था ''यद्यपि उस ने किसी प्रकार का अपद्रव न किया था और उसके मुंह से ही छल की बात नहीं निकली थी'' (53:9ख; ESV)।

यीशु के निर्दोष होने पर यह भी बल हमें रोमी हाकिम पिलातुस के सामने उसकी और से पेश किए गए लूका के विवरण में मिलता है। प्रधान याजकों और उसके अनुयायियों पर लगाए गए आरोपों के बावजूद पिलातुस ने कहा, ''मैं इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं पाता'' (लूका 23:4)। बाद में यीशु को जांच के लिए यहूदी राजा हेरोदेस के पास भेजने के बाद पिलातुस ने प्रधान योजकों और यहूदियों के हाकिमों को बुलाकर उन्हें बताया:

तुम इस मनुष्य को लोगों का बहकाने वाला ठहराकर मेरे पास लाए हो, और देखो, मैं ने तुम्हारे साम्हने उस की जांच की, पर जिन बातों को तुम उस पर दोष लगाते हो, उन बातों के विषय में मैंने उस में कुछ दोष नहीं पाया है। न हेरोदेस ने, क्योंकि उस ने उसे

हमारे पास लौटा दिया है: और देखो, उस से ऐसा कुछ नहीं हुआ कि वह मृत्यु के दण्ड के योग्य ठहराया जाए। इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं (लूका 23:13-16)।

जब यहूदी अगुओं ने ज़िद की कि बरनाबास को छोड़ दिया जाए और यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए तो पिलातुस ने आश्चर्य और परेशानी में कहा ''क्यों उस ने कौन सी बुराई की है? मैं ने उस में मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई बात नहीं पाई! इसलिए मैं उसे पिटवाकर छोड़ देता हूं'' (लूका 23:22)। अन्ततः पिलातुस उनके दबाव में आ गया और उसने प्रसिद्ध हत्यारे बरअब्बा को छोड़ दिया और यीशु को क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दे दिया।

इस कहानी को पढ़ते हुए हम इसके बिल्कुल अन्यायपूर्ण होने से स्तब्ध हैं। यह संक्षेप में हमारी बात है! उद्धार न्याय का नहीं बल्कि अनुग्रह की बात है। न्याय की यह मांग होनी थी कि हम अपने किए हुए पापों के लिए दुख सहें। यीशु उस दण्ड सहने को था जिसका वह हक्कदार नहीं था और यशायाह ने वह सब जो होने वाला था पहले से देख लिया।

उसका महिमा पाना (53:10-12)

यशायाह ने कहा कि यीशु का दुख सहना उसकी महिमा का कारण बना। अध्याय 53 दुखी दास को निर्दोष ठहराए बिना नहीं छोड़ता। अध्याय की अन्तिम तीन आयतों में ही हम आशावादी प्रतिज्ञाओं को देखते हैं:

जब तू उसका प्राण दोषबलि करे,
तब वह अपना वंश देखने पाएगा,
वह बहुत दिन जीवित रहेगा;
उसके हाथ से यहोवा की इच्छा पूरी हो जाएगी।
वह अपने प्राणों का दुःख उठाकर उसे देखेगा
और तृप्त होगा;
अपने ज्ञान के द्वारा मेरा धर्मी दास
बहुतेरों को धर्मी ठहराएगा;
और उनके अधर्म के कामों का बोझ आप उठा लेगा।
इस कारण मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा,
और, वह सामर्थियों के संग लूट बांट लेगा; ... (53:10ख-12)।

रोमियों 4:1-8 में यीशु के दुखों के परिणाम को पौलुस ने बाद में बिल्कुल ऐसा ही बताया। यीशु में विश्वास के द्वारा उसने कहा, हम धर्मी ठहराए जाते हैं, बेशक वास्तव में हम पापी हैं जो दण्ड के योग्य हैं। यशायाह 53 की अन्तिम तीनों आयतों में, यीशु के जी उठने की परोक्ष भविष्यवाणी है। उसे ''जीवतों के बीच में से उठा लिया गया'' (53:8) पर इसके बावजूद भविष्य में किसी समय उसने ''अपने वंश को देखना'' था। आयत 11 कहती है, ''वह अपने प्राणों का दुख उठाकर उसे देखेगा और तृप्त होगा।'' उसकी प्राप्ति के कारण उसे ऊंचा किया जाना था। (''मैं उसे महान लोगों के संग भाग दूंगा''; 53:12क)। यह फिलिप्पियों 2:9-11 में पौलुस की कही बात से बहुत मेल खाता है:

इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

इसका अर्थ यह हुआ कि यह स्पष्ट है कि दुखी दास के बारे में यशायाह की बातें उस सब की झलक थी जो क्रूस पर यीशु के साथ होना था। वे न केवल उसकी जो उसने सहना था झलक थी, बल्कि जो यह करके उसने हमारे लिए प्राप्त करना था उसकी भी विजय थी।

यीशु, पाप के लिए सिद्ध बलिदान

दुखी दास के निर्दोष होने पर ज़ोर देते हुए कि यशायाह 53 उस बात का पूर्वानुमान है जो नये नियम में स्पष्ट की गई है: कि यीशु चाहे पूर्णतया मनुष्य (के साथ साथ पूर्णतया ईश्वरीय; यूहन्ना 1:1; कुलुस्सियों 2:9; इब्रानियों 1:8) था, पर इसके बावजूद वह पूर्णतया बिना पाप के था।

उसकी सेवा जंगल में उसके चालीस दिन की परीक्षा सहने के बाद आरम्भ हुई, जबकि शैतान द्वारा उसे दिए जा सकने वाली चुनौती का सामना किया था (मत्ती 4:1-11; लूका 4:1-13)। पौलुस ने लिखा कि ''जो [यीशु] पाप से अज्ञात था, उसी को उस ने [परमेश्वर] हमारे लिए पाप ठहराया, कि हम उस में हर एक परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं'' (2 कुरिन्थियों 5:21)। ''उसी को ... पाप ठहराया'' का अर्थ यह नहीं है कि वह पाप का दोषी बन गया, बल्कि यह है कि संसार के पापों के परिणाम उसने अपने ऊपर ले लिए। इसी प्रकार 1 यूहन्ना 3:5 कहता है: ''तुम जानते हो, कि वह इसलिए प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं।''

विश्वासियों को बिना बदला लिए दुख सहने का आग्रह करते हुए पतरस ने लिखा कि यीशु ने ''न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली'' (1 पतरस 2:22)।

यीशु के पाप रहित होने के लिए शायद सबसे स्पष्ट बात इब्रानियों 4:15 में मिलती है: ''क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सके; बरन वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।''

केवल पाप रहित होकर हमारे लिए सिद्ध पाप-बलि अर्थात ''निर्दोष और निष्कलंक मेमने'' (1 पतरस 1:19) बन सकता था जो मूसा की व्यवस्था के अनुसार आवश्यक था (लैव्यव्यवस्था 3; 4)।